नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

वैश्विक जलवायु संतुलन में भारत की निर्णायक भूमिका

ब्राजील के बेलेम में चल रहे कोप 30 सम्मेलन में भारत ने एक बार फिर साफ कर दिया है कि जलवायु संकट से निपटने का रास्ता 'जलवायु न्याय' और 'साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारियां' से होकर ही निकलता है. दुनिया आज जब भीषण ताप लहरों, असंतुलित मानसून और चरम मौसम की घटनाओं से जूझ रही है, ऐसे समय में भारत का यह स्पष्ट और साहसिक रुख वैश्विक जलवायु वार्ता को नई दिशा देता है. एक विकासशील देश होते हुए भी भारत जिस गति से ऊर्जा संक्रमण, निम्न-कार्बन विकास और प्रकृति आधारित समाधानों की ओर बढ़ रहा है, वह वैश्विक स्तर पर उदाहरण बन चुका है. कोप 30 में पेश किए गए तथ्य यह बताते हैं कि भारत अपने हिस्से के काम को केवल पूरा ही नहीं कर रहा, बल्कि उससे आगे निकल चुका है.

भारत की कुल बिजली क्षमता में 50 फीसदी से अधिक हिस्सा अब गैर-जीवाश्म ऊर्जा का है. यह उपलब्धि ऐसे समय में हासिल हुई है जब देश की ऊर्जा मांग लगातार बढ़ रही है. भारत ने कोयले की निर्भरता को सीमित करते हुए नवीकरणीय ऊर्जा को गति दी है और संकेत यह हैं कि देश अपना संशोधित एनडीसी लक्ष्य पांच साल पहले ही हासिल कर सकता है. भारत आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादक है. यह स्थिति खुद बताती है कि विकास और पर्यावरण संरक्षण एक साथ चल सकते हैं,यदि नीति स्पष्ट हो और नेतृत्व दृढ़.

2005 से 2020 के बीच भारत ने अपने जीडीपी की उत्सर्जन तीव्रता में 36 फीसदी की गिरावट दर्ज की है. यह केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि यह प्रमाण है कि भारत की विकासयात्रा अब कार्बन-सघन मॉडल पर आधारित नहीं है. उद्योग, ऊर्जा और परिवहन,सभी क्षेत्रों में सुधारों ने देश को निम्न-कार्बन अर्थव्यवस्था की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ाया है. यह उपलब्धि इसलिए भी उल्लेखनीय है क्योंकि भारत ने यह प्रगति बिना भारी ऐतिहासिक उत्सर्जन और बिना पर्याप्त वैश्विक वित्तीय सहायता के हासिल की है.

भारत ने 2.29 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड के समतुल्य का अतिरिक्त कार्बन सिंक तैयार किया है. वनावरण में लगातार वृद्धि यह दिखाती है कि भारत केवल उत्सर्जन कम करने पर ही नहीं, बल्कि प्रकृति की मरम्मत पर भी गंभीरता से काम कर रहा है. जल, भूमि और वन—इन तीनों को भारत ने जलवायु समाधान का केंद्रीय आधार बनाया है. भारत का यह कहना बिल्कुल सही है कि जलवायु संकट का पूर्ण बोझ विकासशील देशों पर डालना न तो न्यायसंगत है और न ही व्यावहारिक. विकसित देशों के ऐतिहासिक उत्सर्जन ने ही मौजूदा संकट की नींव रखी है, इसलिए उनकी जिम्मेदारी भी अधिक है.

भारत की मांग साफ है कि पर्याप्त और पूर्वानुमानित जलवायु वित्त,सस्ती और भरोसेमंद तकनीक सभी देशों को सुलभ होनी चाहिए. दरअसल भारत का संदेश साफ है कि आगे का दशक केवल घोषणाओं का नहीं, बल्कि जमीनी कार्यान्वयन का दशक होना चाहिए. भारत ने अपने घरेलू प्रयासों से दुनिया को रास्ता दिखाया है. अब विकसित देशों की बारी है कि वे अपने वादों को धरातल पर उतारें. यह सभी को समझना होगा कि जलवायु संकट वैश्विक है, और समाधान भी वैश्विक ही होगा. इस बड़े संघर्ष में भारत की भूमिका,एक स्थिर, न्यायपूर्ण और महत्वाकांक्षी नेतृत्व के रूप में अब और अधिक निर्णायक बन चुकी है.

मालवा- निमाड़ की डायरी

नेताओं के दूरी बनाने से हताश पारस

संजय व्यास

उज्जैन उत्तर सीट से लगभग तीन दशक तक अपना दबदबा कायम रखे पहलवान विधायक पारस जैन की हाल के दिनों में मायूसी झलक रही है. 1990 से 2018 तक (1998 में हार) वे इस एक ही सीट से भाजपा के 6 बार विधायक चुने गए थे.

2023 में विधायक निधि के दुरुपयोग के आरोप के चलते भाजपा ने उनका टिकट काट दिया था. 2024 में इस मामले में उनके खिलाफ प्रकरण दर्ज हो गया. ऐसे में उन्हें महसूस हो गया कि पार्टी नेता उनसे दूरी बनाने लगे हैं. पहलवान के नाम से मशहूर रहे पारस जैन को इस मुसीबत की घड़ी में अपनी ही पार्टी नेताओं से तवज्जो नहीं मिली.

उल्लेखनीय है कि लोकायुक्त पुलिस ने देवास के रहने वाले दिनेश चौहान की शिकायत पर पारस जैन सहित आठ अधिकारियों के खिलाफ लोकायुक्त में धोखाधड़ी, पद के दुरुपयोग सहित गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है. पूर्व मंत्री पारस जैन पर आरोप है कि उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों की जमीन को सुरक्षित करने के लिए डेढ़ करोड़ रुपए की लागत से खेत पर दीवार बनवा दी. यह दीवार विधायक निधि से बनवाई गई. अपने उपर कायम प्रकरण से हताश पहलवान ने आखिर कुछ दिन पूर्व आगे कोई चुनाव न लडने के ऐलान के साथ पार्टी नेतृत्व को नसीहत देते हुए कहा कि वरिष्ठ और जमीनी कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलना चाहिए, ताकि संगठन मजबूत रहे. उनकी पार्टी को वरिष्ठों को साथ लेकर चलने की नसीहत को उन्हें पार्टी नेताओं द्वारा दरकिनार करने से जोडकर देखा जा रहा है.

नहीं खत्म हुआ गुटबाजी का दंश

नीमच जिलाध्यक्ष पद से हटने के बाद लगभग 10 माह तक लो-प्रोफ़ाइल रहने वाले पवन पाटीदार की ओबीसी मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष के रूप में ताजपोशी ने नीमच के राजनीतिक समीकरण बदल दिए. यहां पार्टी के कई गुटों में से एक गुट उनकी पहचान रही. उन्हें कभी कटप्पा गैंग कहकर हाशिए पर धकेलने वाले नेता भी अब मुस्कान के साथ स्वागत करते नजर आ रहे हैं. दीपावली मिलन समारोह एवं आत्मनिर्भर भारत सम्मेलन इसका पहला मंच बना. कार्यक्रम में सांसद सुधीर गुप्ता, जिलाध्यक्ष वंदना खंडेलवाल और विधायक दिलीप सिंह परिहार की मौजूदगी में हुए कार्यक्रम में पवन पाटीदार समर्थकों के साथ पहुंचे और उन्होंने संबोधन भी दिया. समझा जा रहा था कि पार्टी में बढ़े उनके कद की वजह से गुटबाजी का दंश खत्म हो जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ.

कार्यक्रम के बाद जारी आधिकारिक प्रेस नोट ने गुटबाज़ी की टीस को फिर से चर्चा में ला दिया. प्रेस नोट में सांसद, जिलाध्यक्ष, विधायक और कार्यक्रम प्रभारी के वक्तव्यों को शामिल किया गया, लेकिन पवन पाटीदार का भाषण और उनकी उपस्थिति को उस महत्व से नहीं दर्शाया गया, जिसकी अपेक्षा की जा रही थी.

तैयारी तगड़ी पर बहस नहीं कर पाए

खण्डवा में सुस्त पड़ी कांग्रेस इकाई में नई जान फूंकने में जुटीं शहर अध्यक्ष प्रतिभा रघुवंशी के नेतृत्व में विगत दिनों सभी पार्षदों को एकत्रित कर नई रणनीति बनाई गई थी. प्रतिभा ने टिप्स दी कि सब एकजुट होकर जनता की समस्याओं को उठाएं एवं उनके समाधान को लेकर आंदोलन करें. लंबी प्रतीक्षा और संघर्ष के बाद आयोजित नगर निगम के विशेष सम्मेलन के दौरान उन्हें मौका मिला. भाजपाई महापौर और परिषद को घेरने आरोपों का पुलिंदा लेकर बैठक में पहुंचे. खंडवा नगर निगम में विपक्ष के नेता प्रतिपक्ष दीपक मुल्लू राठौर हमेशा की तरह लोगों के ध्यानाकर्षण के लिए इस बार जेसीबी पर बैठकर पार्षदों के साथ पहुंचे, मकसद बताया कि सत्ता पक्ष के लोग जेसीबी के फावड़े से भ्रष्टाचार कर रहे. शहर में विकास भेदभाव पूर्ण हो रहा है. कांग्रेसी पार्षद जिस तैयारी से महापौर परिषद को घेरने पहुंचे थे, शहर के भेदभाव वाले विकास पर जुबानी तलवारें तो खिंची मगर अपनी बात रखने सार्थक बहस नहीं कर पाए. विपक्ष के आरोप पर महापौर अमृता यादव ने तथ्यों के साथ कार्य गिनाए और कहा कि आप कभी बैलगाड़ी पर आते हैं, कभी जेसीबी पर. वे नौटंकी करते हैं, विकास कार्यों में सहयोग नहीं.

77 साल की इबादत

भोपाल तब्लीग इज्तिमा भाईचारे की मिसाल

सय्यद असीम अली
विशेष लेख पत्रकार

आस्था, सेवा और एकता का जीवंत उदाहरण

आज भोपाल तब्लीगी इज्तिमा 77 वर्षों से अधिक की सतत मेहनत, आस्था और भाईचारे का जीवंत उदाहरण है. विद्वानों के भाषण, स्थानीय परिवारों की सेवा और प्रशासन व स्वयंसेवकों की मेहनत ने मिलकर इसे दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक आयोजनों में से एक बना दिया है. यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान भी है. यह शांति, सेवा और एकता का संदेश लेकर चलता है और यह याद दिलाता है कि सच्ची आस्था करुणा, अनुशासन और सामूहिक भलाई को बढ़ावा देती है. जैसे ही भोपाल 2025 के इज्तिमा की तैयारियाँ करता है, शहर एक बार फिर दुनिया को खुले दिल से स्वागत करने के लिए तैयार हो रहा है—न केवल आध्यात्मिक अनुभव देने के लिए बल्कि सहयोग, मेहमाननवाज़ी और मानवीय एकजुटता का जीवंत पाठ पढ़ाने के लिए भी.

तब्लीग इज्तिमा, जिसे आलमी तब्लीग इज्तिमा भी कहा जाता है, दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक जमावड़ों में से एक है. यह केवल एक वार्षिक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि दुनिया भर के मुसलमानों के लिए भाईचारे, आत्मसुधार और सेवा का मंच है. भोपाल को इस आयोजन ने एक विशेष पहचान दी है. 1949 में एक छोटी सी सभा से शुरू हुआ यह इज्तिमा आज 10 लाख से ज़्यादा लोगों को एक साथ जोड़ने वाला आयोजन बन चुका है.

शुरुआत और विकास: मस्जिद से मैदान तक का सफर- भोपाल इज्तिमा की कहानी 1949 से शुरू होती है, जब पुराने शहर की मस्जिद शाकूर खां में कुछ उलेमा और स्थानीय मुसलमानों ने धार्मिक चर्चा और आत्मसुधार के उद्देश्य से एक छोटी सी सभा आयोजित की. यह आयोजन धीरे-धीरे लोकप्रिय होता गया और जल्द ही इसकी भीड़ मस्जिद की सीमाओं से बड़ी हो गई. बढ़ते आकार और प्रभाव को देखते हुए कार्यक्रम को ताजुल मस्जिद परिसर में स्थानांतरित किया गया. यहाँ से यह इज्तिमा राष्ट्रीय पहचान प्राप्त करने लगा. लेकिन जैसे-जैसे देश और विदेश से आने वाले लोगों की संख्या बढ़ती गई, 2005 में आयोजन स्थल को शहर से बाहर ईंटखेड़ी / घासीपुरा के विशाल मैदान में ले जाया गया, जहाँ 150 एकड़ से अधिक भूमि पर इसकी व्यवस्था होती है. आज इज्तिमा का कार्यक्रम चार दिनों तक चलता है—शुक्रवार की फ़जर की नमाज़ से शुरू होकर सोमवार की दुआ-ए-खास पर समाप्त. इस दौरान लाखों लोग जमा होते हैं और दुनिया भर से आई जमातें इसमें शरीक होती हैं.

दशक-दर-दशक: विकास की शानदार यात्रा- भोपाल तब्लीगी इज्तिमा की यात्रा इसकी निरंतर प्रगति, सेवा और एकता की प्रतीक रही है. 1950 के दशक में इसकी शुरुआत मस्जिद शाकूर खां में सीमित प्रतिभागियों के साथ हुई, जहाँ स्थानीय सभाओं और आध्यात्मिक संदेशों पर विशेष ध्यान दिया गया. 1960-70 के दशक में इज्तिमा का आयोजन ताजुल मस्जिद में स्थानांतरित हुआ, जिससे इसे देशभर में पहचान मिली और विभिन्न राज्यों से जमातें आने लगीं. 2000 के दशक में वर्ष 2005 में आयोजन स्थल को ईंटखेड़ी के विशाल मैदानों में स्थानांतरित किया गया, जिससे प्रबंधन और व्यवस्था अधिक संगठित और वैज्ञानिक रूप में विकसित हुई. 2020 के दशक में कोविड-19 महामारी के कारण आयोजन में अस्थायी विराम आया, लेकिन 2023-24 में रिकॉर्ड भागीदारी के साथ यह फिर नई ऊँचाइयों पर पहुँचा. आगामी 2025 इज्तिमा (14-17 नवंबर) के लिए और भी अधिक उत्साह और व्यापक भागीदारी की उम्मीद की जा रही है. यह यात्रा दर्शाती है कि कैसे भोपाल का इज्तिमा एक सीमित स्थानीय आयोजन से विकसित होकर आज धार्मिक, सामाजिक और मानवीय एकता का वैश्विक प्रतीक बन चुका है.

हज़रत मौलाना साद और मौलवियों का अमूल्य योगदान- हज़रत मौलाना साद, तब्लीग जमात के शीर्ष वक्ताओं में से एक, भोपाल इज्तिमा में मुख्य प्रवचन देने के लिए प्रसिद्ध हैं. उनके भाषण सरल, सजीव और भावनाओं से भरे होते हैं, जो श्रोताओं के दिलों को छू जाते हैं. वे केवल धार्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहते, बल्कि समाजिक एकता, नैतिक मूल्यों और व्यक्तिगत सुधार पर भी जोर देते हैं. भोपाल इज्तिमा में उनकी उपस्थिति लाखों अनुयायियों के लिए प्रेरणा का स्रोत होती है. उनके प्रवचनों में ईमान की मजबूती, सेवा और समाज में भलाई जैसे विषय प्रमुख होते हैं. हज़रत मौलाना साद का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि लोगों के दिलों में अच्छाई और ईमान के बीज बोना है.

उनकी बातें देश और विदेश से आए लोगों पर गहरी छाप छोड़ती हैं और इज्तिमा के आध्यात्मिक वातावरण को और भी समृद्ध बनाती हैं. ऐसे वक्ता समाज में सकारात्मक बदलाव की प्रेरणा देने वाले होते हैं. हज़रत मौलाना साद और अन्य प्रमुख मौलवियों का योगदान केवल भाषण तक सीमित नहीं है. वे आयोजन की योजना बनाने, व्यवस्थाओं का प्रबंधन करने, शिक्षा और प्रशिक्षण देने, और बाहर जाने वाली 'जमातों' के गठन में भी सक्रिय रहते हैं.

सोशल मीडिया कमाई का नया जरिया

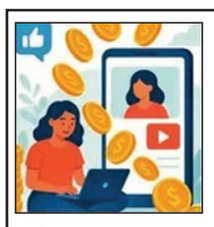

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में संस्कृति, अध्यात्म, पर्यटनस्थलों व लाइफलाइन या घरेलू नुस्खों पर बात करनेवाले प्रभावशाली कंटेंट राइटर और इन्फ्लुएंसर हैं. रील से जुड़ा बैकग्राउंड म्यूजिक भी लोग तैयार करते हैं.

आज का जमाना कंटेंट व कटेंट क्रिएटर्स का है. इसे प्रस्तुत करनेवाले इन्फ्लुएंसर्स की तादाद बढ़ी है. 145 करोड़ लोगों की आबादी में अधिकांश लोग स्मार्टफोन का इस्तेमाल करते हैं. कोरोना काल में लोग घरों में कैद हो गए थे. उस लॉकडाउन के समय सरकार ने चीनी एप्स पर प्रतिबंध लगाया. इसके 10 दिनों के भीतर जुकरबर्ग ने भारत में इंस्टाग्राम लान्च किया. लोगों ने घर बैठे अपना कंटेंट बनाने की शुरुआत की. किसी विषय पर तत्काल मजेदार कमेंट करने लगे लोग बाद में इन्फ्लुएंसर बनते चले गए. फिर पाठ्यक्रम, मार्गदर्शन पर भी रील निकलने लगी. जिनके फालोअर्स की संख्या 10,000 हो जाए वह इन्फ्लूएंसर या कंटेंट क्रिएटर बन जाते हैं. ये लोग 30 से 60 सेकंड का विडियो तैयार करते हैं जिसमें मनोरंजन, पर्यटन, स्वास्थ्य, व्यायाम, सौंदर्य प्रसाधन, रेसिपी, तकनीक आदि का समावेश होता है. ऐसा वीडियो पोस्ट कर वह अपने फालोअर बढ़ाते हैं. यह काम आसान नहीं है. शुरू के 5 सेकंड में दर्शक को अपनी ओर आकर्षित करना पड़ता है. वह एक बार जुड़ जाए तो वीडियो में बांधकर रखने की कला आनी चाहिए. इसके लिए लुभावनी लेकिन गोलमोल बातें की जाती हैं. कंटेंट में कल्पनाशीलता लगती है. सोशल मीडिया का प्रचार तेजी से होने की वजह से 2026 तक रौल का कारोबार 3400 करोड़ रुपए तक पहुंच सकता है. अनेक लोगों के लिए यह जीवनयापन का साधन बन गया है. इन्फ्लुएंसर बनने के शौकीन लोग स्मार्टफोन, रिंगलाइट, कॉलर माइक व स्टैंड या ट्राइपाड का इस्तेमाल करते हैं. कुछ तो ड्रोन कैमरा भी उपयोग में लाते हैं. कंटेंट नियमित रहने और फालोअर्स की तादाद बढ़ने के साथ लोकप्रियता व कमाई भी बढ़ती चली जाती है.

-एमपी मिश्रा

निशानेबाज

लगातार चर्चा में रहा जंगल राज बिहार में किसके सिर पर ताज

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, अपने शहर की सीमेंट-कंक्रीट की ऊंची इमारतों से दूर किसी जंगल की खुली हवा में जाने का हमारा मन करता है. आप भी हमारे साथ चलिए. जंगल में मंगल मनाएंगे.

हमने कहा, जंगल का नाम मत लीजिए. प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने बिहार की अपनी सारी चुनाव सभाओं में लालू परिवार के जंगलराज की बुरी तरह आलोचना की है. उन्होंने कहा कि बिहार को लालटेन युग और जंगल राज से बाहर लाना है.

पड़ोसी ने कहा, कोई इन नेताओं से पूछे कि बिहार में 15 साल से नीतीशकुमार की सरकार है तो अबतक जंगल राज दूर क्यों नहीं कर पाए? डबल इंजन सरकार की बात करने वाली बीजेपी बिहार का विकास क्यों नहीं कर पाई?

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि केंद्रीय जांच एजेंसियों का विपक्ष के खिलाफ इस्तेमाल कर मोदी और शाह ने भारत में जंगल राज लाया है. जंगल राज शब्द राजनीति में इतना चल पड़ा है कि हमें

फिल्म जंगली की याद आने लगी है. उसमें शम्मी कपूर ने गाया था चाहे कोई मुझे जंगली कहे, कहने दो जी कहता रहे, हम प्यार के तूफानों में घिरे हैं, हम क्या करें!

हमने कहा, अभी प्यार का नहीं इलेक्शन का तूफान चल रहा है. बिहार के बाद महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनाव होंगे. आपको जंगल से इतना प्रेम है तो रुडयार्ड किपलिंग की किताब जंगलबुक पढ़ लीजिए या फिर उस पर बनी एनिमेशन फिल्म मोगली देख लीजिए, उसमें जंगल में भेड़ियों द्वारा पाले गए साहसी बच्चे मोगली, उसके हितैषी भालू बधीरा और शेरखान नामक बाघ की भूमिका है. मोगली फिल्म में गुलजार की लिखी लाइनें हर किसी की जुबान पर चढ़ गई थीं- जंगल जंगल बात चली है, पता चला है, चड्डी पहन के फूल खिला है, फूल खिला है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू भी जंगल से लगाव रखते थे. उन्होंने अपनी डायरी में अमेरिकी कवि राबर्ट फ्रास्ट की पंक्तियां लिख रखी थीं वुडस आर लवली डार्क एंड डीप, बट आई हैव दि प्रॉमिसेस टु कीप एंड माइल्स टु गो बिफोर आई स्लीप, इसका अर्थ था- जंगल घने व लुभावने हैं मगर मुझे वादे निभाने हैं और अंतिम नींद आने से पहले मुझे मीलों चलते जाना है

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12077 - डॉ. सागर खादीवाला

ऐसी बात या कार्य जिससे किसी का मान घटे 4. वाक्य, उक्ति, सार्थक शब्द, वह वाक्य जो इस्लाम धर्म का मूल मंत्र है (उर्दू) 5. दक्षिणी वायु, वसंतकाल की वायु (सं.) 9. कण, दाना, सूजी 12. समान, तुल्य 13. हानि के बदले में मिलने वाला धन (उर्दू) 14. ओस (उर्दू) 16. भव्य, वैभवपूर्ण, तड़क-भड़क वाला (उर्दू) 18. बीता हुआ, दशा, अवस्था 19. मोर, नर्तक, अभिनेता (सं.) 22. फल आदि का निचोड़ा हुआ तरल अंश 23. लीन, लिप्त

बाएं से दाएं
1. राजा का पुत्र 4. अल्प, थोड़ा 6. माफी 7. विघ्न, बाधा (उर्दू) 8. जो सदा हरा रहे, हमेशा फूलने वाला 10. धन, संपत्ति, जादू, इंद्रजाल 11. रहना, रहने का स्थान 15. डंडे में चीथड़ा लपेटकर बनाई हुई मोटी बत्ती जिसे हाथ में लेकर चलते है (उर्दू) 17. गुस्से में लाल-पीला होना 20. मातृभूमि (उर्दू) 21. नायक, अगुवा 24. व्यायाम, बहुलता (उर्दू)

ऊपर से नीचे
1. दैत्य, असुर 2. सिपाहियों-पहरेदारों आदि का प्रधान 3. कोई

Solution 12076

आ	रा		कु	र	ता		अ
लो	ग		मा	स			मा
क		प	र	म		स	व
न	ट	नी		ला	वा	रि	स
	मा	र		ई	द		
प	ट		प		वि	ग्र	ह
का	र	तू	स		वा	ह	न
ना		ती	ली		द		न

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में शिक्षा में अरूचि व व्यवधान होगा, अधिकारी के कोप का सामना करना पड़ेगा, मित्रों से बैचारिक मतभेद रहेगा, वर्ष के मध्य में प्रियजनों के सहयोग से कार्यों में सफलता मिलेगी, शासन सत्ता का लाभ नवीन योजनाओं में पूँजी निवेश होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यहां सहयोग मिलेगा, सिंह राशि के व्यक्तियोंको निजी क्षेत्र में रूचि रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अधिकारी के आदेश का पालन करना होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होने का योग है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक चंचल तथा मिलनसार होगा, नेतृत्व करने की क्षमता होगी, किसी तरह की उच्च शिक्षा का ज्ञाता होगा, नौकरी अच्छी रहेगी, आय के एक से अधिक साधन उपलब्ध होंगे, माता पिता का भक्त होगा.

मेष- रोक टोक के चलते कार्यस्थल पर विवाद संभव है, माता पिता का सहयोग कामकाज में सहायक रहेगा, स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें.

वृषभ- व्यापारिक साझेदारी लाभदायी रहेगी, शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी, मनोवाछित सफलता मिलेगी, आगन्तुकों के आने से हर्ष होगा.

मिथुन- किसी सिफारिस से अटके काम आसानी से पूरे होंगे, राजनैतिक क्षेत्र में प्रयास करने पर सफलता मिलेगी, उच्चाधिकारियों का सहयोग रहेगा.

कर्क- नाराज चल रहे लोगों को मनाना मुश्किल होगा, नये लोगों के साथ संपर्क मेलजोल बढ़ेगा, आकस्मिक रूके कार्य बनेंगे, मान सम्मान प्राप्त होगा.

सिंह- सोचा कार्य किसी की मदद से पूरा होगा, आकस्मिक खर्च में वृद्धि होगी, लाभ होगा. अतिथि आगमन होगा, मनोरंजन आदि में खर्च होगा.

कन्या- कानूनी मामलों में व्यस्तता रहेगी, नियोजित कार्य में सफलता मिलेगी, शुभ समाचारों की प्राप्ति होगीमन में हर्ष रहेगा, नवीन उपहार आदि की प्राप्ति होगी.

तुला- ले देकर काम कराने की योजना सफल होगी, बैचारिक गतिरोध दूर होंगे, नवीन वस्त्राभूषण आदि की प्राप्ति होगी, साहसिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी.

वृश्चिक- कारोबारी यात्रा सफल होगी, श्रम एवं प्रयास करने पर अच्छी सफलता मिलेगी, लाभ प्राप्त होगा, अनावश्यक कार्यों में न उलझें.

धनु- आकस्मिक लाभ के अवसर मिलेंगे, जमिथुन जायजाद एवं सुख समृद्धि में वृद्धि होगी, लेखन अध्ययन के कार्यों में रूचि रहेगी, धार्मिक प्रवास का योग है.

मकर- वाणी दोष से विवाद पैदा हो सकता है, अत्याधिक भरोसा न करें, लेखन एवं अध्ययन के कार्यों में दिन अनुकूल रहेगा, सफलता प्राप्त होगी.

कुम्भ- युवाओं को अच्छी सफलता मिलेगी, कोर्ट कचहरी आदि के कार्यों में सफलता मिलेगी, व्यापार व्यवसाय में प्रगति होगी, लाभ में संतोष रहेगा.

मीन- नई जिम्मेदारी आने से परेशानी हो सकती है, गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें, अधिकारियों की अनुकूलता रहेगी, व्यर्थ के विवाद से बचें.

उदयकालीन ग्रह चाल

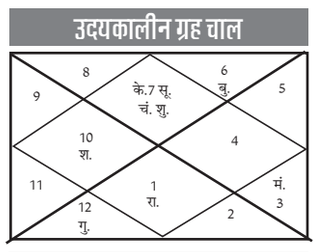

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2082 मार्गशीर्ष कृष्ण सप्तमीं भौमवासरे रातअंत 5/2, पुष्य नक्षत्रे रात 12/42, शुभ योगे शाम 4/35, विष्टि करणे सू.उ. 6/34, सू.अ. 5/26, चन्द्रचार कर्क, शु.रा. 4, 6, 7, 10, 11, 2 अ.रा. 5, 8, 9, 12, 1, 3 शुभांक- 6, 8, 2.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमीं/षष्ठी को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, बाजरा आदि में मंदी का रूख रहेगा, गुड़ खांड, शक्कर, कालीमिर्च, धनियां, अलसी, अरंडी, में नरमी रहेगी. भाग्यांक 9064 है.

SUDOKU 7209

4			9		6	1		8
6	8							
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7208

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1